निकम्मा लड़का

क्रम

निकम्मा लड़का	09
वारिस	19
पर्सनल मामला	38
फिर हार गई वह	46
उसका सपना	58
बदली तुम हो, सादिया	67
स्वाँग	77
अपने ठिये पर	92
सरबजीत	109
फिर एक बार	125
वापसी	135
औरत और औरत	141

निकम्मा लड़का
ले देकर एक संगी साथी इन आँखों का पानी

सर्वत्र व्यापार भ्रष्टाचार, बहुसंख्यक लोगों की दुर्दशा, सामाजिक विघटन, धार्मिक और जातीय उन्माद, हत्या-लूट-बलात्कार, माफिया सरगनाओं का राजनीतिक रूपान्तरण, कमरतोड़ महंगाई और दंगे-फसाद में झोंक दी गयी जनता की कराह को चुपचाप तामाशाई बनकर देखते रहना अगर एक अपराध है, तो आज के अधिकांश लोग अपराधी हैं। तरह-तरह के असामाजिक तत्व सरेआम जो चाहते हैं कर गुजरते हैं। अगर हर शहर और गाँव में उन्हें ललकारने वाले चंद लोग आगे आ जायें तो इस देश की सरकारी मशीनरी से अधिक ताकतवर होंगे, रोज हो रही ऐसी घटनाएँ आश्चर्यजनक रूप से घट जायेंगी। फिर भी अगर आज हम किसी अपरिचित के आने पर दरवाजा खोलने में नहीं डरते, हमारे बच्चे स्कूल आ-जा रहे हैं, हमारी माँ-बहनें बाज़ार से सौदा-सुलफ कर वापस आ पा रही हैं तो इसलिए कि कुछ ऐसे लोग अभी हमारे समाज में जिंदा हैं जिनकी आँखों का पानी अभी मरा नहीं है, जो अपनी तंग हाल स्थितियों में भी दरियादिल हैं, जो एक पसली के होकर भी शेर का साहस रखते हैं।

कथाकार नमिता सिंह के कहानी संग्रह 'निकम्मा लड़का' का वह दब्बू और सीधा लड़का ऐसा ही नौजवान है। पूरी पुस्तक का पाठ एक सुखद अहसास से भर देता है। साथ ही चमत्कृत भी करता है कि कहानी संग्रह समग्रतः इतना अच्छा है संग्रह की बारहों कहानियाँ शिल्प-कथ्य और संवेदना की दृष्टि से बेहतर हैं। अपने अगल-बगल घट रहे तल्ख और निहायत प्यारे जीवनानुभवों को इन कहानियों में इस तरह पिरोया गया है कि इस समकालीन समाज की 'सोशल इंजीनियरिंग' किताब के पन्ने की तरह हमारे सामने खुल जाती है। इन कहानियों में मानव-मन की इतनी परतें खुलती हैं कि कई जगहों पर गद्यांश काव्य का रूप ले लेते हैं। ऐसा काव्य जिसका भाष्य अपरिमित हो।

इन कहानियों में बिना दिखाये ही एक ऐसी राह दिखती है जो पाठक को रचना के लिए अनिवार्य विचारधारा तक बहुत सहज ही ले जाकर खड़ा कर देती है। नमिता रचना में सर्वोपरि कहानी के उस मानवीय पहलू से बखूबी वाकिफ़ हैं। इसलिए इन कहानियों का केन्द्र दुःख से घिरा मनुष्य और उसकी संवेदना है।

'निकम्मा लड़का' संग्रह की शीर्षक कहानी है। 'वह एक निकम्मा लड़का था और घरवालों का भी उसके बारे में यही ख़याल था।' पढ़ाई-लिखाई में ज़हीन और प्रतिभाशाली होना भी उसकी एक समस्या है। चाचा-माँ, भाई-बहन सब उसे डाक्टर, इंजीनियर या फौज में आला अफसर देखना चाहते हैं। लेकिन उसे किताबों की लत लग गयी है। साहित्य और कला की भी। लोग उसे डरपोक समझते हैं, परंतु वह बुज़दिल नहीं है। उसकी समस्या यह है कि वह थोड़ा अधिक ही 'दिल' रखता है।

किताबें इस कदर बुज़दिल बना देंगी न सोचा था
लबे-ख़ामोश पर इज़हार का मौसम नहीं आया

अपने युगीन परिवेश को उकेरती हुई यह कहानी लगातार पारिवारिक संदर्भों से जुड़ी रहती हैं। इज़हार का मौसम तब आता है जब 'भैया बहुत समझदार हैं, बिना बात लड़ाई-झगड़े में नहीं पड़ते' कि छवि वाला लड़का एक विधवा का मकान हड़पने के लिए शहर के गुण्डे लल्ला का कहर उसकी बेटी पर टूटता देखता है। ''वह कालेज से लौटता हुआ उधर से गुजरा, उस लड़की को घेरते हुए और बेहूदगी करते हुए उन लोगों को देखा। वह आगे निकल चुका था जब उस लड़की और उसकी माँ के चिल्लाने तथा पुकारने की आवाज़

उसके कानों में गूंजी, आगे बढ़ते-बढ़ते वह फिर पलट कर पीछे आया, उसने देखा कि आस-पास खड़े कुछ लोग सिर्फ तमाशा देख रहे हैं। कुछ सेकेण्ड खड़ा वह भी उन लोगों को देखता रहा... तभी लल्ला के एक साथी ने उस लड़की के पूरे प्रतिरोध के बावजूद उसकी साड़ी खींचकर अलग फैंक दी। उसे लगा कि यह सब देखते हुए उसका दम घुट रहा है। एक फंदा सा कसने लगा है उसकी गर्दन के चारों ओर जिसे लल्ला कस रहा था। (उसे लगा कि) बीच सड़क पर बैठी और रोती चिल्लाती उस लड़की और उसकी माँ को इस हाल में छोड़कर अगर वह आगे बढ़ गया तो उसकी गर्दन पर लगा फंदा कसता ही चला जायेगा और वह घुट-घुटकर मर जायेगा।'' फिर वही हुआ जो होना था, लड़का बचाव के लिए जब उन गुण्डों के बीच गया तो वे उस पर पिल पड़े, पर उसका साहस देखकर बहुत सारे लोग उत्तेजित हो गुण्डों पर पिल पड़े और उन्हें भागना पड़ा।

संग्रह की दूसरी कहानी है-वारिस, सम्पत्ति हथियाने, जमीन बढ़ाने, ताकत के उन्माद, सत्ता के लालच और झूठी शान में शुरू हुई पुश्तैनी दुश्मनी से निकली 'गैंगवार' पर लिखी गयी यह कहानी अद्‌भुत है। इस लंबी कहानी का कथ्य, वर्णन, सूक्ष्मतर अनुभूतियों का चित्रण इसे एक विशेष कहानी बनाता है। 'आँखों देखा हाल' जैसे वाकये को एक अविस्मरणीय कहानी बना देने की लेखकीय क्षमता पाठक को चकित कर देती है। दुर्जेय ताऊजी के भतीजे और अध्यापक पिता के पुत्र सुरेन्द्र के कुख्यात सरगना 'भैया जी' बनने की अन्तर्कथा बहुत सौम्य तरीके से चलती है। लौह-कवच धारण किये सुरेन्द्र का अंतर्मन दिखाना किसी लेखक के लिए कम मुश्किल कार्य नहीं था। इस कहानी में अपराध का समाज-शास्त्र बहुत रचनात्मकता के साथ उभरकर सामने आता है। सुरेन्द्र की पत्नी सुमित्रा का चरित्र उसके समानान्तर खड़ा दिखता है और सुरेन्द्र? उसका बेटा मनोज? ''कब से नहीं हँसा वह... उसे याद भी नहीं बेटे के सिर पर हाथ फेरना... उसने सिर झटका। कीड़े जैसा रेंगता विचार छिटक कर दूर जा पड़ा। 'जो हँसा सो फंसा' जैसा सिद्धांत उसके यहाँ भी चलता है। यानी 'जिसने सोचा वह गया काम से'। उसके यहाँ है सिर्फ एक्शन। विचार करना मना है। इससे आदमी कमजोर होता है। दौड़ो.... भागो... एक्शन... फिर दौड़ फिर भाग... एक्शन पैक्ड ज़िंदगी।''

'पर्सनल मामला' कहानी शहर के दंगे के बाद लगे कर्फ्यू की कथा है। ''जिला प्रशासन पूरे शहर को शायद सख़्त पाठ पढ़ाना चाहता था। एक बार कर्फ्यू में रगड़ दो लंबे समय तक। चीं बोल जायेंगे तभी ठीक होंगे।'' ''लेकिन हर कोई चीं नहीं बोलता। सराय नूरूद्‌दीन या शाहपाड़ा या काज़ीपाड़ा के झोंपड़ों या एक-एक कमरे में ठुंसे-घुटे लोग चीं बोल जाते हैं। लेकिन जनकपुरी या शिवपुरी के लोग तो पूरी तरह छुट्‌टी के माहौल में हैं, यूं मेन रोड पर कर्फ्यू का सन्नाटा है। लेकिन मुख्य सड़क से भीतर शिवपुरी पहुंच कर तो जैसे जंगल में मंगल''। यह धर्मनिरपेक्ष जिला प्रशासन की कृपा है कि अल्पसंख्यक मुहल्लों की हालत खस्ता है। दुःख में कोई कैसे किसी आदमी के पास जाय जो बांट दिया गया है, फिर भी रियाजुद्‌दीन अपने मित्र रंजीत के मुहल्ले में छिपता-छिपाता जान बचाकर आया है। ठेकेदार, रंगबाज, नवधनाढ्य, मुहल्ला सुरक्षा समिति के अध्यक्ष रंजीत के यहाँ। इसलिए कि ''फ़ाके हो रहे हैं, जो कुछ घर में था सब खत्म हो गया.... कुछ सामान ऊमान दिलवाओ यार... सुना है तुम्हारी तरफ सब नार्मल है।'' रियाजुद्‌दीन रिस्क लेकर आता है और रिस्क लेकर रंजीत उसे हफ़्ते भर का सामान दिलवाता है, जबकि सामूहिक चंदे से कट्‌टा खरीद कर जेब में डाले हर युवा की ज़बान पर है कि काश कोई साला मुसल्ला मिल जाता। रंजीत के मन में रियाजुद्‌दीन के प्रति उपजी बंधुता चाहे पर्सनल मामला हो, पर यही इस कहानी का हासिल है।

'फिर हार गई वह' परिवार की जिम्मेदारियाँ ढोती हुई अविवाहित और अकेली रह जाने वाली एक

अध्यापिका की कहानी है। वह अपना सारा ममत्व अपनी छोटी बहन और उसके मनसेधू पर न्यौछावर कर देती है। पर पाती है उपेक्षा, तिरस्कार। महाविद्यालय से लेकर विश्व विद्यालयों तक में पढ़ाने वाली ऐसी अध्यापिकाओं के जीवन में घुसकर उनकी मार्मिक कहानी कहने में नमिता सिंह को महारत हासिल है। उनके उपन्यास 'अपनी सलीबें' में भी ऐसे अध्याय आते हैं।

'उसका सपना' प्रेम विवाह किये जोड़े का अपना घर बनाने का सपना है जो अन्ततः इस दुनिया के सामाजिक-आर्थिक ताने-बाने के कारण पूरा नहीं हो पाता है। 'बदली तुम हो सादिया', 'स्वांग' तथा 'सरबजीत' तीन खूबसूरत प्रेम कहानियां हैं, पर इनमें आया हमारे समाज और राजनीति का यथार्थ इतना विद्रूप है कि तन-मन कांप जाता है। 'बदली तुम हो सादिया' में हिन्दू मुस्लिम दो धर्मों के बीच खिला प्रेम का गुलाब तोड़कर डाली से अलग कर दिया जाता है। भारत से अमरीका की यात्रा करती हुई शादी शुदा सादिया सत्ताइस वर्ष बाद भी अपना प्रेम नहीं भूल पाती। वह अपनी सहेली और प्रेमी की बहन से उसकी बेटी नेहा का हाथ अपने बेटे के लिए मांगती है पर वह भी उसे कहाँ मिल पाता है। 'स्वांग' प्रेम के समर्पण की पराकाष्ठा है। 'सरबजीत' की कथा तो भयावह है। इंदिरा गांधी की मृत्यु के बाद सिक्खों के लोमहर्षक संहार की कथा सरबजीत जैसे लोगों के सर्वथा बरबाद हो जाने की प्रेमकथा है। यह 'फिर एक बार' बदलते हुए युग और व्यक्ति पर सिहरते हुए अतीत की सुगंध की कथा करती हैं। 'वापसी', 'बूढ़ी काकी' और 'चीफ की दावत' से आगे बढ़कर हमारे समय में आयी स्वार्थपरकता खोखलेपन और अमानुषीकरण को बेनकाब करने वाली कहानी है। 'अपने ठिये पर' तथाकथित अतिक्रांतिकारी साहित्यकारों की पोल खोलती है। छोटी परंतु निहायत बेवाक यह कहानी जाति-जहर में डूबे समाज में हर साहित्यकार को अपने गिरेवान में झांकने को बाध्य करती है। यह कहानी पढ़कर मुझे बनारस के कवि चकाचक बनारसी की चार पंक्तियां अनायास याद हो आयीं

जाति-पांति और ऊंच-नीच में
सगरे अदमी जरत-मतर हौ,
ऊपर से जब बोलता तऽ
लगेगा मुंह से फूल झरत हौ

'औरत और औरत' फैन्टेसी और उत्तर आधुनिक लहजे में कही गयी स्त्री विमर्श की कहानी है। सदियां बदल गई पर औरत को गुलाम बनाने के तरीके नहीं बदले। उनमें इजाफा ही हुआ है। प्रो. निर्मला जैन कहती हैं कि मैंने अपनी आंखों से देखा है। दुनिया भर में औरतों के प्रति मर्दों का नज़रिया कमोवेश एक जैसा है। इसमें पूरब-पश्चिमी में कुछ खास फर्क नहीं है, यह सुखद संयोग है कि यह कथा संग्रह नमिता जी ने हिंदी की सुधी आलोचक डा. निर्मला जैन को ही समर्पित किया है।

अब अपनी बात 'निकम्मा लड़का' कहानी की कुछ पंक्तियों से ही खतम करना चाहता हूँ। ''उस दिन सबेरे जब वह सोकर उठा तो बहुत खुश था जैसे कोई अच्छी किताब पढ़ने के बाद बहुत दिन तक मन में खुशी और ताज़गी भरी रहती है।''

दिनेश कुशवाह

'हंस' - अक्टूबर 1998